# स्कूली शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में सामुदायिक गान की सार्थकता

लता पाण्डे*

**शांति की स्थापना का मुद्दा आज अत्यधिक आवश्यक और प्रासंगिक है। यही कारण है कि आज शिक्षा के क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक सभी स्तरों पर शांति के मूल्य के विकास पर बल दिया जा रहा है। बच्चों में परस्पर सद्भाव, एक-दूसरे की संस्कृति के प्रति प्रेम एवं सम्मान, देशप्रेम, शांति, अनुशासन सदृश मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक है कि उन्हें ऐसे शिक्षक मिलें जो स्वयं भी भावनात्मक एकता के सूत्र में बँधे हों। मूल्य अनुभव द्वारा ही आत्मसात किए जा सकते हैं। परस्पर स्नेह, सद्भाव, एक-दूसरे की सहायता करना, एक-दूसरे की भाषा एवं संस्कृति के प्रति सम्मान आदि मूल्य स्थायी रूप से तभी ग्रहण किए जा सकते हैं, जब उन्हें ऐसी परिस्थितियाँ मिलें, जिनमें वे इन मूल्यों का अनुभव कर सकें। सामुदायिक गान कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं के देशभक्ति के गीत एक साथ गाने का अवसर प्रदान कर बच्चों तथा शिक्षकों में भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता का भाव जाग्रत किया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि सभी सेवा-पूर्व तथा सेवारत शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रमों में सामुदायिक गान में प्रशिक्षण दिया जाए।**

शांति, परस्पर सद्भाव, सौहार्द्र सदृश सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का विकास शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य है। चारों ओर व्याप्त अशांति, अंतर्कलह आदि के कारण शांति की स्थापना का मुद्दा अत्यधिक आवश्यक और प्रासंगिक है। यही कारण है कि आज शिक्षा के क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक सभी स्तरों पर शांति के मूल्य के विकास पर बल दिया जा रहा है।

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नयी दिल्ली

महात्मा गांधी के अनुसार –

*यदि हम स्थायी रूप से शांति कायम रखना चाहते हैं तो हमें इसकी शुरुआत बच्चों से करनी होगी। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 भी शांति के मूल्य के विकास को महत्ता देती है। बच्चों में परस्पर सद्भाव, एक–दूसरे की संस्कृति के प्रति प्रेम एवं सम्मान, देशप्रेम, शांति, अनुशासन सदृश मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक है कि उन्हें ऐसे शिक्षक मिलें जो स्वयं भी भावनात्मक एकता के सूत्र में बँधे हों। ऐसे शिक्षक जो स्वयं भी साथी शिक्षकों की संस्कृति और उनकी भाषा का सम्मान करते हों। मूल्य न ही सिखाए जा सकते हैं और न ही रातों रात विकसित किए जा सकते हैं। मूल्य अनुभव द्वारा ही आत्मसात किए जा सकते हैं। परस्पर स्नेह, सद्भाव, एक–दूसरे की सहायता करना, एक–दूसरे की भाषा एवं संस्कृति के प्रति सम्मान आदि मूल्य स्थायी रूप से तभी ग्रहण किए जा सकते हैं, जब उन्हें ऐसी परिस्थितियाँ मिलें, जिनमें वे इन मूल्यों का अनुभव कर सकें।*

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 मूल्य सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में नृत्य, आलेखन, संगीत, दस्तकारी, आदि क्रियाकलापों को बखूबी शामिल करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 की इस पहल को एन.सी. ई.आर.टी. द्वारा दो दशक पहले शुरू किये गए एक वृहत् कार्यक्रम के संदर्भ में देखा जा सकता है, जिसमें बच्चों में शिक्षा के अनुभवात्मक मूल्यों का विकास के उद्देश्य के मद्देनज़र वर्ष 1991 में सामुदायिक गान पर केंद्रित एक परियोजना की शुरुआत की गई थी। इस परियोजना के मुख्य उद्देश्य थे–

- सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देना।
- शिक्षकों तथा बच्चों को साथ रहने (लर्निंग टू लिव टुगेदर) का अवसर प्रदान कर उनमें भावात्मक एकता जाग्रत करना।
- सामुदायिक गान कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं के देशभक्ति के गीत एक साथ गाने का अवसर प्रदान कर बच्चों में भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता का भाव जाग्रत करना।
- परियोजना के क्रियाकलाप–
  - अंतर्राज्यीय विद्यार्थी - अध्यापक शिविर
  - शिक्षक एवं शिक्षक- प्रशिक्षकों के लिए सामुदायिक गान प्रशिक्षण शिविर
  - सामुदायिक गान

प्रस्तुत लेख में इस परियोजना के दो क्रियाकलापों (i) शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए सामुदायिक गान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन तथा (ii) सामुदायिक गान कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा की गयी है। इसके साथ ही शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सामुदायिक गान के प्रशिक्षण तथा आयोजन को सम्मिलित करने की आवश्यकता तथा उद्देश्यों पर भी विस्तृत चर्चा की गई है।

परस्पर स्नेह, शांति और भावनात्मक एकता जाग्रत करने के लिए गीत एक सशक्त माध्यम है। गीत–संगीत भला किसे आनंदित

नहीं करता। गीत जब मिलकर गाया जाता है तो आनंद और भी बढ़ जाता है। हर समाज, वर्ग और हर देश में समूह गान की परंपरा पायी जाती है। विभिन्न अवसरों पर किए जाने वाले आयोजन हमें एक साथ गाने का अवसर देते हैं। हम सबका अनुभव है कि हम जब मिलकर गाते हैं तो परस्पर स्नेह और अपनत्व की भावना और भी बढ़ जाती है। अनुभूतियाँ और भी गहन हो जाती हैं, जब गीत देशभक्ति का हो, सब मिलकर गा रहे हों और हमारी अपनी भाषाओं में हों। शिक्षक सामुदायिक गीतों से परिचित होंगे तो निश्चित रूप से वे अपनी कक्षाओं में बच्चों को इन्हें सिखाकर उनमें बचपन से ही परस्पर सद्भाव जगाने में समर्थ होंगे।

बच्चों को सही उच्चारण तथा लय के साथ गीत सिखाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक को स्वयं वह गीत सही ढंग से ज्ञात हो। सामुदायिक गान प्रशिक्षण अध्यापक शिविर का आयोजन शिक्षकों को सामुदायिक गीत सीखने के साथ विभिन्न मूल्यों की अनुभूति का अवसर प्रदान करना है।

## उद्देश्य

- विभिन्न प्रदेश के शिक्षकों को एक साथ रहने का अवसर प्रदान कर उनमें परस्पर स्नेह, मिलकर रहना आदि मानवीय मूल्यों का विकास करना।
- शिक्षकों में सांप्रदायिक सद्भाव उत्पन्न करना।
- शिक्षकों को देश के विभिन्न भागों की संस्कृति, सौंदर्य, प्राकृतिक परिवेश एवं प्राकृतिक संसाधनों की अनुभूति का अवसर प्रदान करना।
- शिक्षकों में अनुशासन, कार्य-संस्कृति सदृश गुणों का विकास।
- शिक्षकों को विभिन्न क्रियाओं के नियोजन का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना।
- शिक्षकों में देश-प्रेम, संस्कृति के प्रति गौरव, सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा आदि मूल्यों का विकास।
- राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता की भावना जाग्रत करना।
- शिक्षकों को रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना।

## अवधि

- आठ से दस दिन (ग्रीष्मावकाश या शीतावकाश के दौरान)

## प्रतिभागी राज्य

- चार राज्य जिनमें एक राज्य द्वारा शिविर का आयोजन
- चारों राज्यों के राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा विभिन्न जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों से चयनित शिक्षक प्रशिक्षक

## आवास व्यवस्था

- प्रत्येक कक्ष में विभिन्न राज्यों से आए एक-एक प्रतिभागी।

## दैनिक क्रियाकलाप

- योगाभ्यास
- किन्हीं दो गीतों का प्रशिक्षण (प्रतिदिन पिछले दिवस सीखे गए गीतों का पुनराभ्यास। तत्पश्चात् दो नए गीत का प्रशिक्षण)
- शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा एक-दूसरे के प्रदेश की भाषा, संस्कृति आदि जानकारी का आदान-प्रदान।
- रचनात्मक क्रियाकलाप
- किसी प्रतियोगिता का आयोजन जैसे-वाद विवाद, भाषण, रचनात्मक लेखन
- सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

## विभिन्न भारतीय भाषाओं के सामुदायिक गीत

सामुदायिक गान कार्यक्रम हेतु 'आओ मिलकर गाएँ' नामक पुस्तक एवं ऑडियो कैसेट एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए हैं। इनमें तेरह विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीस गीत सम्मिलित हैं। पुस्तक में इन गीतों को हिंदी एवं रोमन लिपि के साथ-साथ इनकी मूल लिपि में भी प्रस्तुत किया गया है। इनका हिंदी एवं अंग्रेज़ी में अर्थ भी इस उद्देश्य के साथ दिया गया है कि भाव समझकर जब कोई भी गीत गाया जाता है तो आनंद और भी बढ़ जाता है। इन सामुदायिक गीतों में कहीं देश के प्रति गौरव की भावना निहित है, तो कहीं मातृभूमि की समृद्धि का गुणगान किया गया है। कोई गीत कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश को एकता सूत्र में पिरोने का संदेश देता है, तो कोई गीत परस्पर सौहार्द्र की भावना को विकसित व पल्लवित करने की प्रेरणा देता है।

विभिन्न भारतीय भाषाओं के इन सामुदायिक गीतों की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत हैं–

भारतभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य व समृद्धि का गुणगान करते हुए भारत माँ को नमन किया गया है। श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय रचित इस गीत में -

*वंदेमातरम्, वंदेमातरम्*
*सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्*
*शस्य श्यामलां मातरम्, वंदे मातरम्।*

मुहम्मद इकबाल का गीत - 'सारे जहाँ से अच्छा' जहाँ बच्चों के हृदय में यह भावना जाग्रत करता है कि हमारा देश सबसे अच्छा है, वहीं बच्चों को यह भी सिखाता है -

*मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना*
*हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा*

नन्हे-मुन्नों के हृदय में वीरता एवं परस्पर सौहार्द्र की भावना का संचार करता है, रमापति शुक्त रचित हिंदी गीत -

*नन्हे मुन्ने कहलाते हम*
*लेकिन जब बढ़ जाएँगे*
*धीर बनेंगे, वीर बनेंगे*
*शूर-वीर कहलाएँगे, ''दुश्मन मार भगाएँगे''*
*नन्हे मुन्ने कहलाते हम*
*लेकिन जब बढ़ जाएँगे*

*हाथ बढ़ाकर प्रेम दिखाकर*
*सबको मित्र बनाएँगे ''दुनिया नई बसाएँगे''*

वही विनय चंद्र मौदगिल्य का गीत –

*हिंद देश के निवासी*
*सभी जन एक हैं*
*रंग, रूप, वेश, भाषा*
*चाहे अनेक हैं*

बच्चों को बतलाता है कि भले ही हमारे रंग, रूप, वेश व भाषा आदि भिन्न-भिन्न हैं, पर हम सब भारतवासी एक हैं।

यही 'हम सब एक हैं' की भावना बड़ी ही खूबसूरती से सुरजीत रामपुरी के पंजाबी गीत में भी पिरोई गई है –

*इक बाग दे फुल्ल असी हाँ*
*इक अरश दे तारे*
*कौन आसाँदी खुशबू खोहवे*
*हनेरे कौन पसारे*

हम सब एक बाग के फूल हैं? एक आसमान के तारे हैं। हमारी खुशबू कौन छीन सकता है, कौन अँधेरा फैला सकता है।

नीनू मजूमदार का गुजराती गीत बच्चों को मिलकर रहने की प्रेरणा देता है। यह गीत बच्चों को समझाता है कि यह धरती, आकाश, चाँद, तारे आदि हम सबके हैं, किसी एक के नहीं। समस्त भेदभाव केवल हमारा, तुम्हारा आदि शब्दों के कारण है। भले ही हमारी भाषाएँ भिन्न हैं पर मानवीय भावनाएँ – हँसना, रोना, आशा, निराशा हम सब में एक-सी हैं।

*आकाशगंगा, सूर्य, चंद्र, तारा,*
*संध्या उषा कोइना नथी।*
*कोनी भूमि, कोनी नदी, कोनी सागर धारा*
*भेद केवल शब्दे 'अमारा ने तमारा'*
*एज हास्य एज रूदन आश ए निराशा*
*एज मानव उर्मि, पण भिन्न भाषा।*

बच्चों में देशभक्ति व देश की रक्षा हेतु कर्तव्य भाव जाग्रत करता है। डॉ. दाशरथी का तेलुगु गीत–

*पिल्लल्लारा पापल्लारा रेपटि भारत पोरूल्लारा*
*कन्याकुमारिकि काश्मीरानिकि*
*अन्योन्यतनु पेन्चंडि*
*वीडनि बंधुम वेयंडि*
*पिल्लल्लारा पापल्लारा*

बच्चों, तुम कल के नागरिक हो। ... राष्ट्रध्वज सदैव ऊँचा रखो। इसके सम्मान की सदा रक्षा करो। ..... कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत को स्नेह के सेतु से जोड़कर इस स्नेह-बंधन को सदा बनाए रखने में सहायक बनो।

भारत के प्रति गौरव की भावना समाहित है, कवि सुमित्रानंदन पंत के गीत में–

*जय जन भारत जन मन अभिमत*
*जन गण तंत्र विधाता*
*गौरव भाल हिमालय उज्ज्वल,*
*हृदय हार गंगाजल*
*कटि विंध्याचल सिंधु चरण तल*
*महिमा शाश्वत गाता*

*जय नव मानवता निर्माता, सत्य अहिंसा दाता*
*जय हे, जय हे, शांति अधिष्ठाता*

हरीराम आचार्य रचित 'जय जय हे भगवति सुरभारती' में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की वंदना की गई है।

प्रेम धवन का गीत संदेश देता है-

*ये वक्त की आवाज़ है मिल के चलो,*
*ये जिंदगी का राज़ है मिल के चलो,*
*मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो।*
*आज दिल की रंजिशें मिटा के आओ,*
*आज भेदभाव सब भुला के आओ,*
*आज़ादी से है प्यार जिन्हें देश से है प्रेम,*
*कदम-कदम से और दिल से दिल मिला के आओ।*
*मिल के चलो .....।*

आज समय की यही माँग है कि हम सब मिलकर चलें। समस्त बैर-भाव एवं भेदभाव को तजकर अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कदम-से-कदम और दिल-से-दिल मिलाकर एक होकर आगे चलना है।

अपनी धरती के प्रति असीम प्रेम की भावना को दर्शाता है श्री सतीश दास का असमिया गीत-

*एई मातिरे मॅरॅमते,*
*दूर आकाहार रॅहॅन*
*कियॅनो लागे-लागे?*
*हागॅर तॅलिर मानिक*
*कियॅनो लागे-लागे?*
*आँहा, आँहा,*
*मातिर बुकुत मॅनॅर मालॅती बुतॅलो।*

इस धरती के प्यार में मैंने इसे चूम लिया है। हमें दूर आकाश के रंग क्यों चाहिए? समुद्र के नीचे के माणिक क्यों चाहिए? आओ, इस धरती के नीचे से अपने मन का आनंद तलाश करें, उसे प्राप्त करें।

भारत भूमि के गौरव का गान है पी. भास्करन् के मलयालम गीत में -

*जन्म कारिणी भारतम्-कर्म मेदिनी भारतम्*
*नम्मलाम् जनकोटितन् अम्मयागिय भारतम्।*

हमारी जन्मभूमि भारत महान कृत्यों की भूमि है। यह भूमि हम करोड़ों भारतवासियों की माँ है।

*वीरपुरातन संस्कारत्तिन वेरोडुम मण्णुम*
*पारिल शांति वल्लर्त्तुम वृतियुम अम्मतन नेट्टम्।*

इस देश की माटी में प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और शौर्य की अनेक गाथाएँ समाहित हैं। चारों ओर शांति हो-यही हमारे देश ने हमेशा शंखनाद किया है।

स्नेहपूर्वक मिलकर चलने व कार्य करने की प्रेरणा देता है संस्कृत श्लोक -

*ओऽम सं गच्छध्वं सं वदध्वं*
*सं वो मनांसि जानताम्।*
*देवा भागं यथापूर्वे*
*संजानाना उपासते।*
*समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः*
*समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।*

आर.एन जयगोपाल का कन्नड़ गीत बच्चों को संदेश देता है-

*ओ ... चेलुविन मुद्दिन मक्कले*
*मने मनेय अंगल्लदि अरलिरूव हूवुगले*
*नालेदिन नाडिदनु नडेसुवरू नीवुगले*

सुंदर तथा प्यारे-प्यारे बच्चो, तुम हर घर के आँगन में खिले हुए सुंदर फूलों की भाँति हो। तुम ही हो जिन्हें भविष्य में इस देश को आगे बढ़ाना है।

कन्नड़ गीत बच्चों को परस्पर मैत्री भाव बनाए रखने, बिना आलस किए निरंतर कार्य करते हुए मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा भी देता है –

*स्नेहितरल्लि प्रीतिय तोरि सोदर भावदे नोडि*
*सोमारियागदे कोट्टिह केलसव तप्पदे माडि*
*यारे आगलि कष्टदल्लिद्दरे सहाय हस्तव नीडि*
*भेदव तोरेदु बालिरि एन्दु यल्लरू ओन्दु गूडि*
*ओ ..... चेलुविन*

सुब्रमण्यम भारती का तमिल गीत बच्चों को संदेश देता है कि सबके साथ मिल-जुलकर खेलो। कभी अपने साथियों के साथ झगड़ा मत करो। बुरा काम करने वाले को देखकर कभी मत डरो। उनका डटकर विरोध करो और कायरता न दिखाकर उन्हें खूब प्रताड़ित करो।

*ओडि विलैयाडु पाप्पा ... नी ...*
*ओयन्दिरूक्कल् आगादु पाप्पा*
*कूडि विलैयाडु पाप्पा ... ओरू*
*कुलन्दैयै वैयादे पाप्पा*
*पादगम सैभवरैक् कण्डाल् – नाम*
*भयं कोल्ल लागादु पाप्पा*
*मेदि मिदिचु विडु पाप्पा – अवर्*
*मुगत्तिलुमिलन्दु विडु पाप्पा*

हुंडराज दुखायल का सिंधी गीत बच्चों के हृदय में यह भाव जाग्रत करता है कि यह मेरा देश मिसरी व मधु से भी अधिक मधुरता देने वाला है। मैं अपने तन-मन सर्वस्व को इस पर न्यौछावर करता हूँ-

*ही मुहिंजो वतन मुहिंजो वतन मुहिंजो वतन*
*मिसरीय खां मिठेरो, माखीय खां मिठेरो,*
*कुरबान तंह वतन तां कर्यां पेहंजो तन बदन*
*ही मुहिंजो वतन*

धन धान्ये पुष्प भरा में भी अपनी धरती की समृद्धि व गौरव की गाथा है। श्री द्विजेंद्रलाल राय का बंगला गीत –

*धॅन धान्ये पुष्पे भॅरा, आमोदर एई वसुंधरा*
*ताहार माझे आछे देश ऐक सॅकूल देशेर सेरा*
*सॅकूल देशेर रानी से जे आमार जॅन्मॅभूमि*
*आमार एई देशेते जॅन्मॅ, जेनॅ एइ देशेतेई मॅरी*

हमारी धरती धन, धान्य एवं पुष्पों से समृद्ध है। हमारी मातृभूमि अन्य समस्त देशों की महारानी है। हमारी मातृभूमि जैसी धरती और कहाँ मिलेगी। मैंने इस धरती में जन्म लिया है। इस धरा के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर करने की अंतिम इच्छा है।

साने गुरुजी का मराठी गीत ठोकर लगने पर गिरने के बदले दृढ़ता से डटे रहने की प्रेरणा देता है-

*आता उठवु सारे रान*
*आता पेटवु सारे रान*

*शेतकऱ्यांच्या राज्यासाठी*
*लाऊ पणाला प्राण*
*पडून ना राहू आता*
*खाऊ ना आता लाथा*
*शेतकरी कामकरी*
*मांडणार हो ठाण*

श्री गिरिजा कुमार माथुर रचित गीत –

*होंगे कामयाब, होंगे कामयाब*
*हम होंगे कामयाब एक दिन*
*हो हो हो मन में है विश्वास*
*हम होंगे कामयाब एक दिन*

यह विश्वास जगाता है कि एक दिन आएगा जब सफलता प्राप्त होगी और संपूर्ण विश्व में शांति का साम्राज्य होगा।

इन गीतों को पं. रविशंकर, श्री उमाशंकर चंदोला, विनयचंद्र मोदगिल्य, तीरथ राम आज़ाद, कानु घोष, एम.बी. श्रीनिवासन, सतीश भाटिया, सतीश दास एवं द्विजेंद्रलाल राय ने स्वरबद्ध किया है।

## एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित सामुदायिक गान प्रशिक्षण शिविर

बच्चों को इन गीतों को सिखाने के लिए देश के विभिन्न भागों में शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं ताकि शिक्षक बच्चों को विभिन्न भारतीय भाषाओं के गीत सही उच्चारण के साथ सिखा सकें। शिक्षक प्रशिक्षण हेतु आडियो कैसेट 'आओ मिलकर सीखें' तैयार किया गया है।

शिक्षक प्रशिक्षक एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु केरल, असम, मेघालय, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, ओडिशा में सामुदायिक गान शिविर आयोजित किए गए। जिनमें लगभग 600 शिक्षक प्रशिक्षक एवं शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। सामुदायिक गान में अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

दस दिवसीय शिविर में शिक्षक तथा शिक्षक प्रशिक्षकों को सामुदायिक गान सिखाया जाता है। सभी अत्यंत रुचिपूर्वक सामुदायिक गीत सीखते हैं। इन गीतों के माध्यम से जहाँ उनमें अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है वहीं देशभक्ति, देश के प्रति निष्ठा, संस्कृति के प्रति गौरव की भावना भी उत्पन्न होती है। ये सामुदायिक गीत शिक्षकों में राष्ट्रीय तथा भावनात्मक एकता के भाव जाग्रत करते हैं।

शिविर में विभिन्न प्रदेशों के शिक्षक रात-दिन एक साथ रहकर जब विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं तो उन्हें इस बात की अनुभूति हो जाती है कि भाषा, संस्कृति आदि विभिन्नताएँ परस्पर मैत्री, प्रेम एवं सद्भाव बनाए रखने में बाधक नहीं हैं। शिविर के दौरान एक-दूसरे के प्रदेश, उसकी भाषा एवं संस्कृति को जानने में शिक्षक अत्यंत रुचि रखते हैं। साथ-साथ रहने से उनमें परस्पर स्नेह उत्पन्न हो जाता है और वे एक हो जाते हैं।

## सामुदायिक गान कार्यक्रम

सामुदायिक गान कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को विभिन्न भाषाओं के देशभक्ति के गीत एक साथ मिलकर गाने का अवसर प्रदान कर उनमें भावनात्मक एकता जगाना है। हम सबका अनुभव है कि हम जब मिलकर गाते हैं, तो परस्पर प्यार, स्नेह व अपनत्व की भावना और भी बढ़ जाती है। यही अनुभूतियाँ बढ़ जाती हैं, जब गीत देशभक्ति का हो, सब मिलकर गा रहे हों और हमारी अपनी भाषाओं में हों। इसी को दृष्टिगत रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बच्चों में देश-प्रेम एवं भावनात्मक एकता जागृत करने के लिए सामुदायिक गायन कार्यक्रम आयोजित करने की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के बच्चे विभिन्न भारतीय भाषाओं के देशभक्ति के गीत एक साथ मिलकर गाते हैं। देश प्रेम, एकता, अपनी संस्कृति के प्रति आदर जैसे मूल्यों से पगे इन गीतों को जब बच्चे मिलकर गाते हैं, तो निश्चित ही भावनात्मक रूप से एक हो जाते हैं। सामुदायिक गान कार्यक्रम में जब बहुत सारे बच्चे एक स्थल पर एक साथ एक सुर में श्री रवींद्रनाथ ठाकुर रचित राष्ट्रगान 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे' गाते हुए भारत की जयजयकार करते हैं, तो लगता है कि सामुदायिक गान कार्यक्रम का उद्देश्य सार्थक हो गया।

## सामुदायिक कार्यक्रम के विभिन्न चरण

- आयोजक प्रदेश के शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक का आयोजन किया जाता है। इस बैठक में कार्यक्रम के उद्देश्य से अवगत कराया जाता है। बैठक में कार्यक्रम का स्थल, तिथि तथा प्रतिभागी विद्यालयों के संबंध में निर्णय लिए जाते हैं।
- प्रतिभागी विद्यालयों के शिक्षकों के लिए पाँच दिन का सामुदायिक गान अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया है।
- प्रशिक्षित शिक्षक अपने-अपने विद्यालयों में बच्चों को सामुदायिक गीत सिखाते हैं।
- सामुदायिक गान कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास तीन-चार दिनों तक किया जाता है। इसमें गीत के साथ कोरियोग्राफ़ी का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
- सामुदायिक गान कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कई सामुदायिक गान के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 14 नवंबर, 2000 को नयी दिल्ली के जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम में आयोजित सामुदायिक गान कार्यक्रम में दिल्ली और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों के दस हज़ार स्कूली बच्चों ने भाग लिया था।

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न प्रदेशों में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा भी सामुदायिक गान के कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। भोपाल में 9 अगस्त

2001, मैसूर तथा शिलांग में 2 अक्तूबर 2001, अजमेर में 5 अक्तूबर 2001, भुवनेश्वर में 14 नवंबर 2001 को सामुदायिक गान के कार्यक्रम व्यापक पैमाने पर आयोजित किए गए।

श्री लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम, हैदराबाद में 2 अक्तूबर 2002 को सामुदायिक गान कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस कार्यक्रम में हैदराबाद के लगभग 6500 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

नेशनल एबिलिम्पिक ऐसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा शारीरिक चुनौती वाले बच्चों हेतु आयोजित प्रथम नेशनल एबिलिम्पिक के उद्घाटन समारोह के अवसर पर उनके अनुरोध पर एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा दिनांक 27 नवंबर, 2003 को आयोजित सामुदायिक गान कार्यक्रम में देहरादून के विभिन्न स्कूलों के लगभग 5500 बच्चों ने भाग लेकर एक सुर में देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत विभिन्न भाषाओं के गीत गाए।

18 फरवरी, 2005 को रायपुर के पुलिस ग्राउंड में सामुदायिक गान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में रायपुर के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया और विभिन्न भाषाओं में गीत एक साथ गाकर यह जता दिया कि भले ही हमारी भाषाएँ अलग-अलग हैं पर हम सब एक हैं। इस प्रकार संपूर्ण देश के विभिन्न भागों में आयोजित सामुदायिक गान कार्यक्रमों में लगभग 40,000 बच्चे और 2000 शिक्षक भाग ले चुके हैं।

लेनिन ने कहा था -

*किसी भी देश का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश के बच्चे कौन-से गीत गाते हैं।*

हमारे बच्चे कौन-से गीत गाते हैं - यह काफ़ी हद तक इस बात पर भी निर्भर करता है कि हम उन्हें कौन-से गीत सिखाते हैं व गाने का अवसर देते हैं।

## शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम और सामुदायिक गान कार्यक्रम

यदि देश के समस्त शिक्षक प्रशिक्षक संस्थानों में शिक्षण-प्रशिक्षणार्थियों को सामुदायिक गान में प्रशिक्षण दिया जाए और इस प्रकार के शिविरों का आयोजन किया जाए तो इन गीतों से तो परिचित होंगे ही, साथ ही अपने साथी प्रशिक्षणार्थियों के साथ रहने का अवसर प्राप्त होने से वे उनकी संस्कृति, भाषा आदि से अवगत हो सकेंगे। साथ रहने से उनमें परस्पर सहभागिता जैसे मूल्यों के विकास का भी अवसर प्राप्त होगा। विभिन्न भाषाओं के गीत सीखने का अवसर तथा आनंद मिलने से अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग की भावना उत्पन्न होगी। प्रशिक्षित संदर्भ व्यक्तियों से प्रशिक्षण प्राप्त कर वे शुद्ध उच्चारण, लय के साथ गीत सीखेंगे जिसका सुखद परिणाम यह होगा कि अपने संस्थान में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान तो वे इन गीतों की सफल प्रस्तुति कर सकेंगे। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् जब वे शिक्षक बनेंगे तो अपने विद्यालय में बच्चों को ये गीत सही ढंग

से सिखा पाएँगे और सामुदायिक गान कार्यक्रम आयोजित कर पाएँगे।

सामुदायिक गान कार्यक्रम बच्चों में भावनात्मक एकता को जगाता ही है, साथ ही उनमें मातृभूमि के प्रति प्रेम, अपनी अनूठी संस्कृति के प्रति गौरव, सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान एवं प्रशंसा की भावना जाग्रत कर परस्पर सौहार्द्र बनाए रखने का संदेश भी देता है। इसलिए सामुदायिक गान में प्रशिक्षण शिक्षण कार्यक्रम का अभिन्न अंग होना चाहिए।